बाल कथा–1

चुहिया लाई मटर का दाना

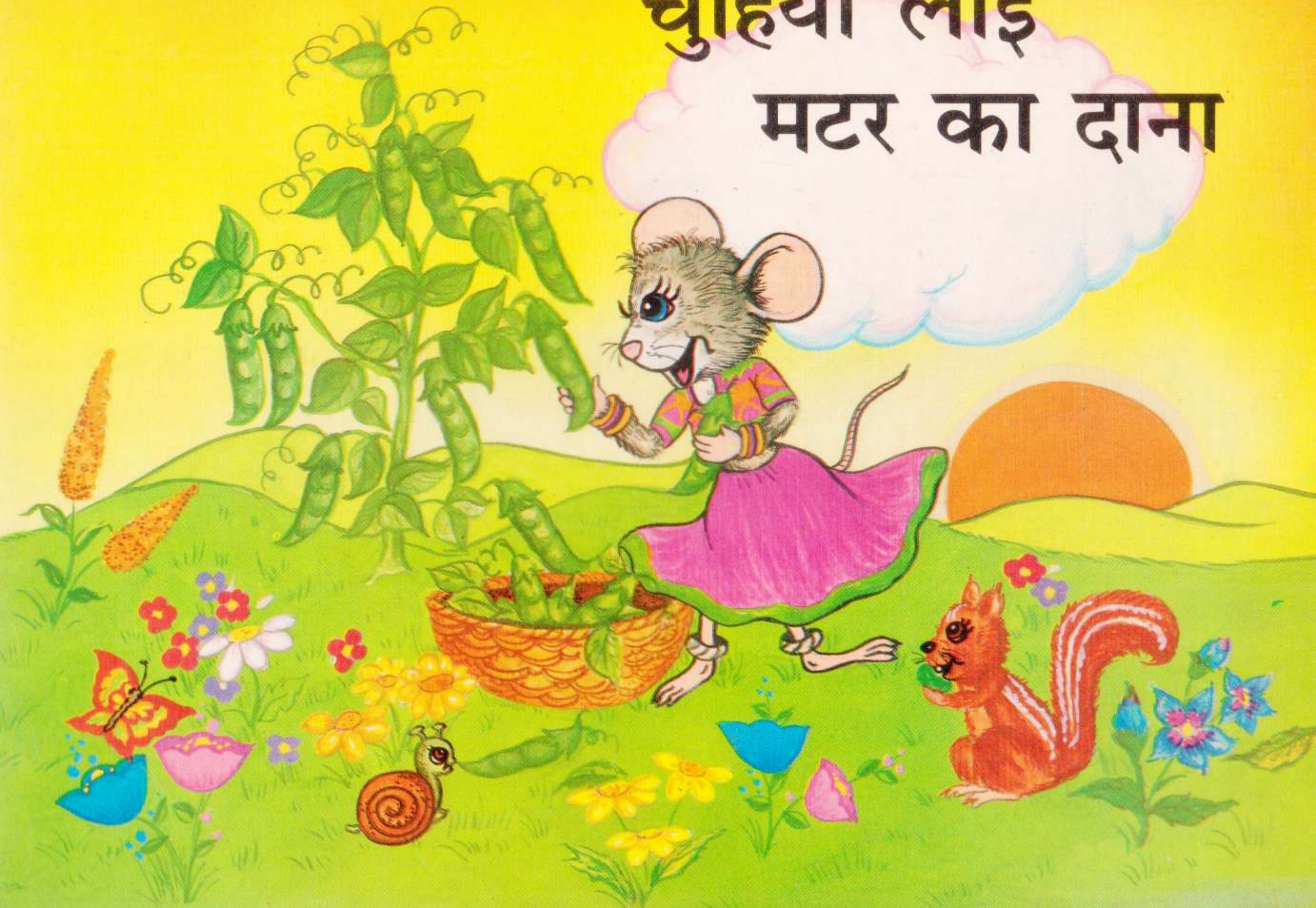

नाम ------------

कक्षा ------------

चुहिया लाई मटर का दाना

शान्ता मोहन
चित्रांकन : नीना बहल

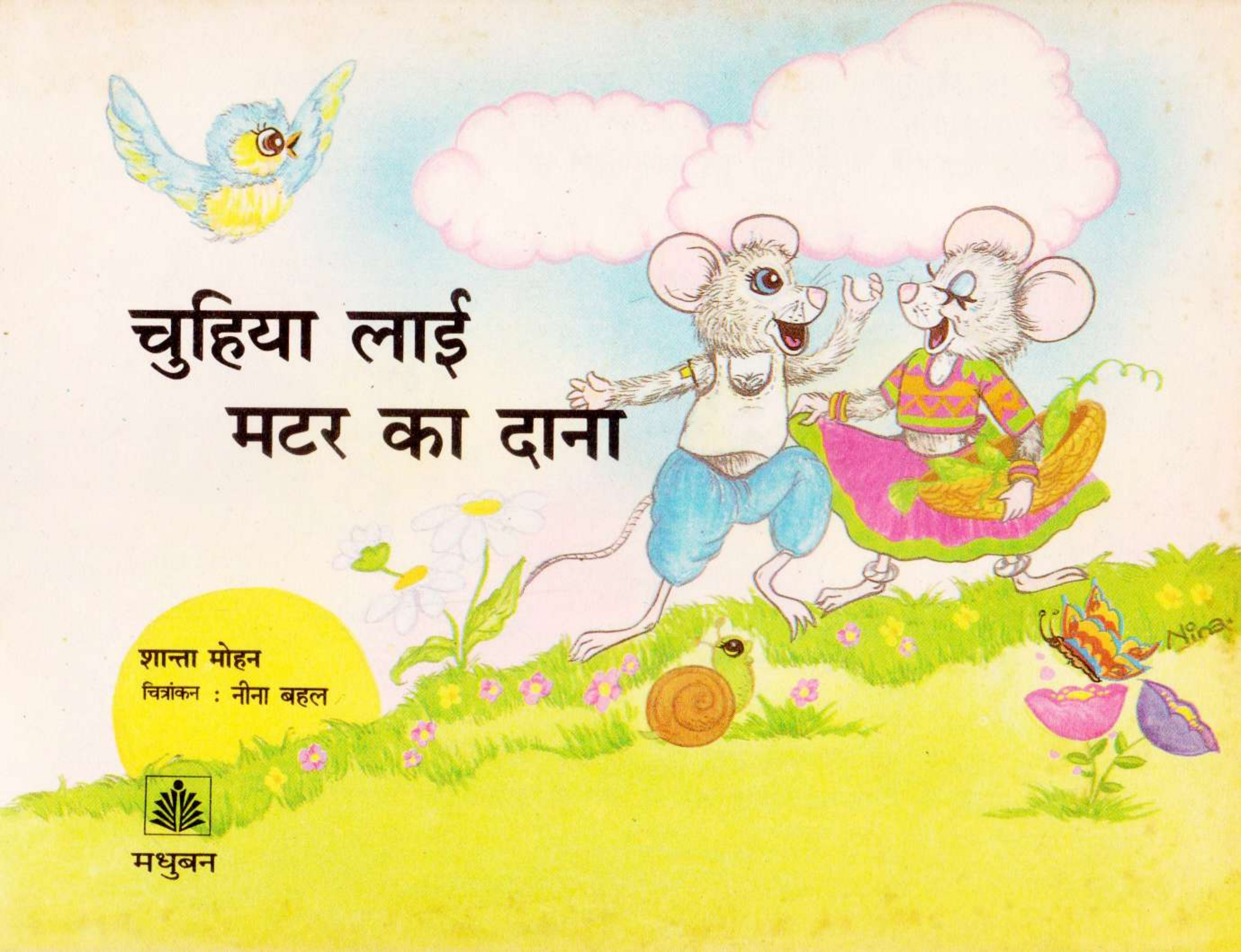

मधुबन

एक चूहा और चुहिया एक खेत के कोने में अपना बिल बना कर आराम से रहते थे। एक दिन चूहे को बड़ी भूख लगी। उसने चुहिया से कहा — चुहिया! मुझे बड़ी भूख लगी है, जा मेरे लिए कुछ खाने को ले आ।

चुहिया भाग कर उसके लिए थोड़े गेहूँ और चावल के दाने ले आई। पर चूहा बोला — मैं तो यह चावल, मटर के साथ ही खाऊँगा। जा कहीं से एक दो मटर के दाने ले आ।

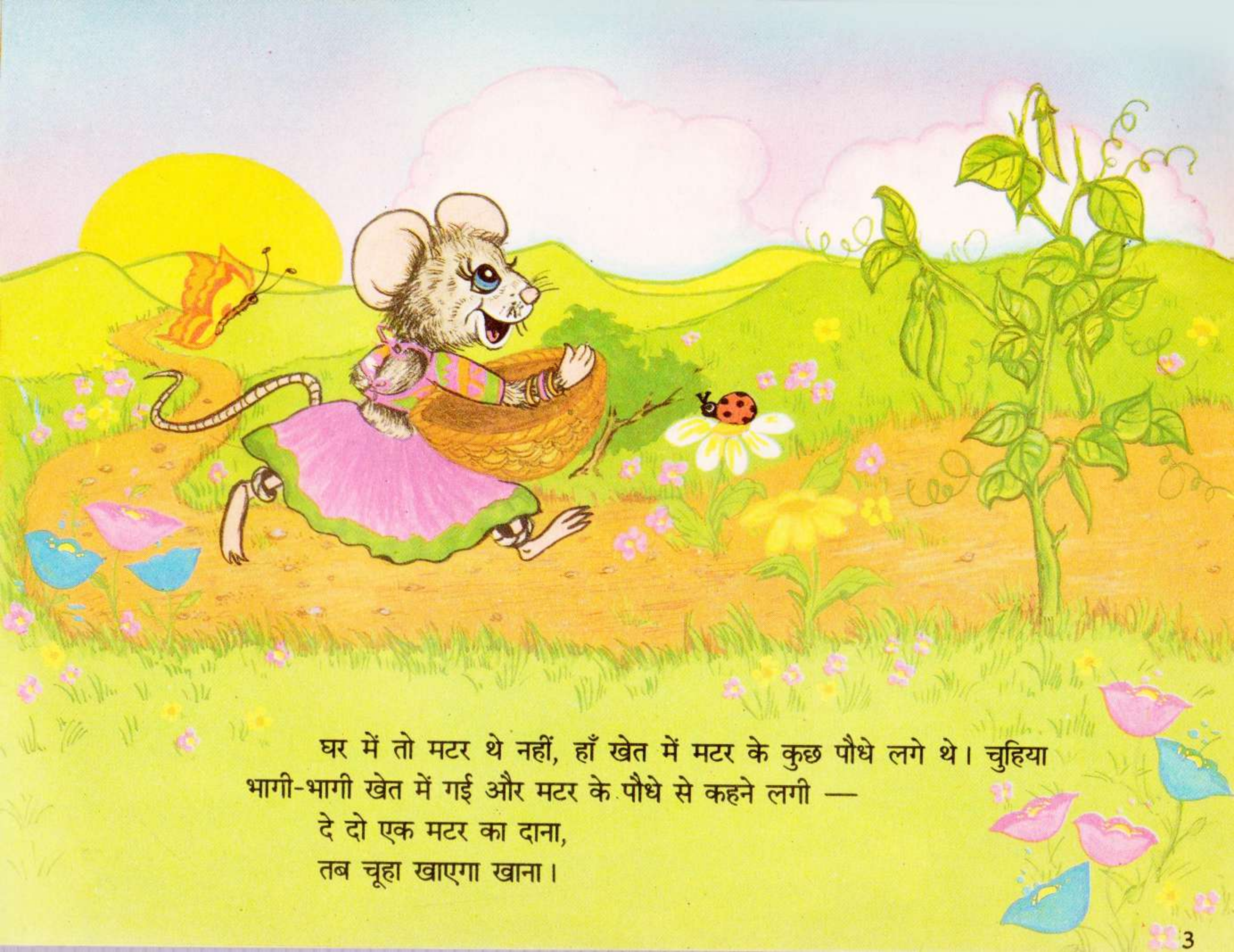

घर में तो मटर थे नहीं, हाँ खेत में मटर के कुछ पौधे लगे थे। चुहिया भागी-भागी खेत में गई और मटर के पौधे से कहने लगी —

दे दो एक मटर का दाना,
तब चूहा खाएगा खाना।

मटर के पौधों ने छोटी सी चुहिया को देखा और उसकी बात सुनी। पर अभी मटर की फलियों में दाने ही नहीं थे।

पौधा बोला — चुहिया! पहले हमें पानी तो दे, तब फलियों में मटर पड़ेंगे, तभी तो हम तुझे मटर दे सकेंगे।

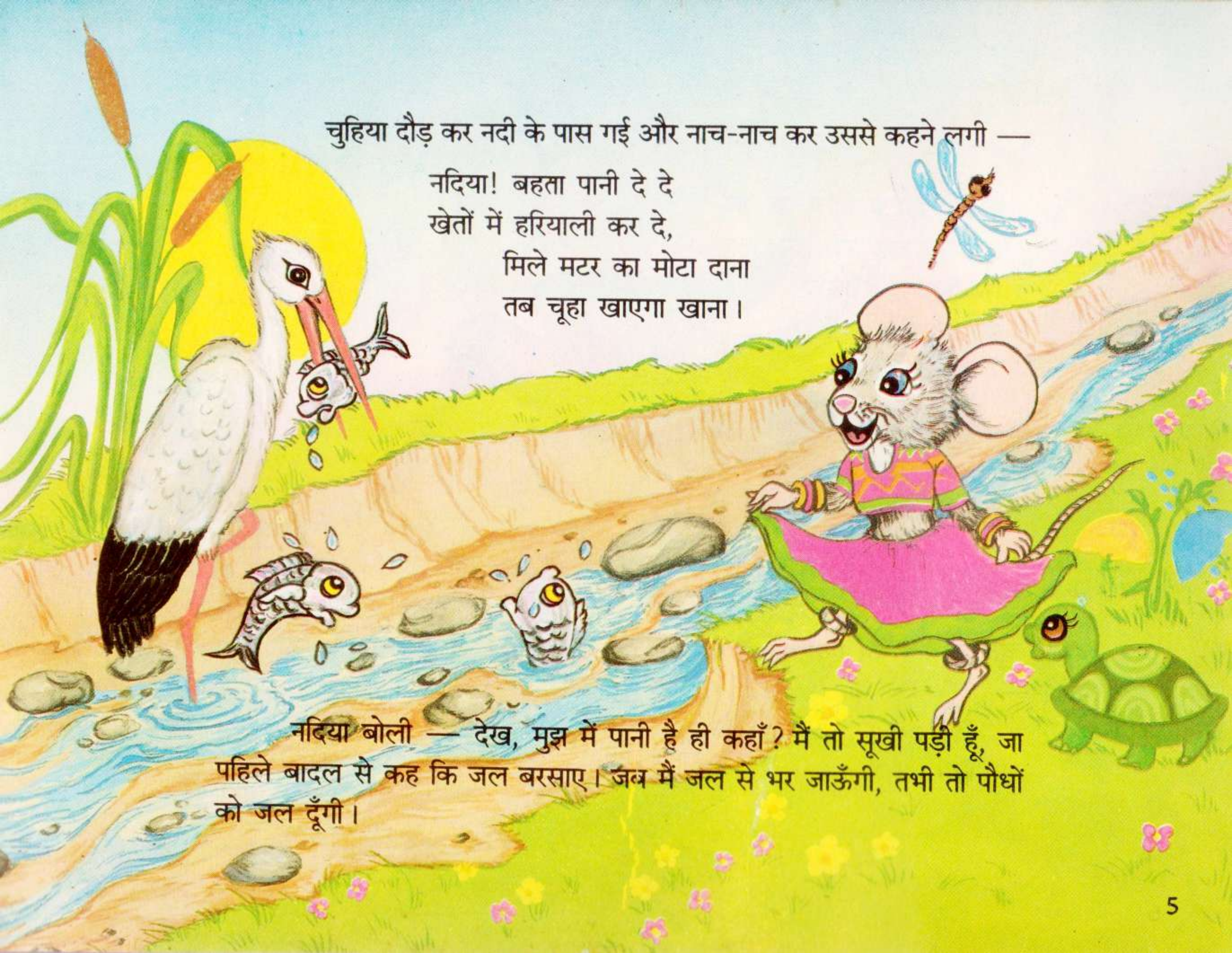

चुहिया दौड़ कर नदी के पास गई और नाच-नाच कर उससे कहने लगी —

नदिया! बहता पानी दे दे
खेतों में हरियाली कर दे,
मिले मटर का मोटा दाना
तब चूहा खाएगा खाना।

नदिया बोली — देख, मुझ में पानी है ही कहाँ? मैं तो सूखी पड़ी हूँ, जा पहिले बादल से कह कि जल बरसाए। जब मैं जल से भर जाऊँगी, तभी तो पौधों को जल दूँगी।

चुहिया भाग कर एक पहाड़ी पर चढ़ गई और बादल की ओर मुख करके बोली —

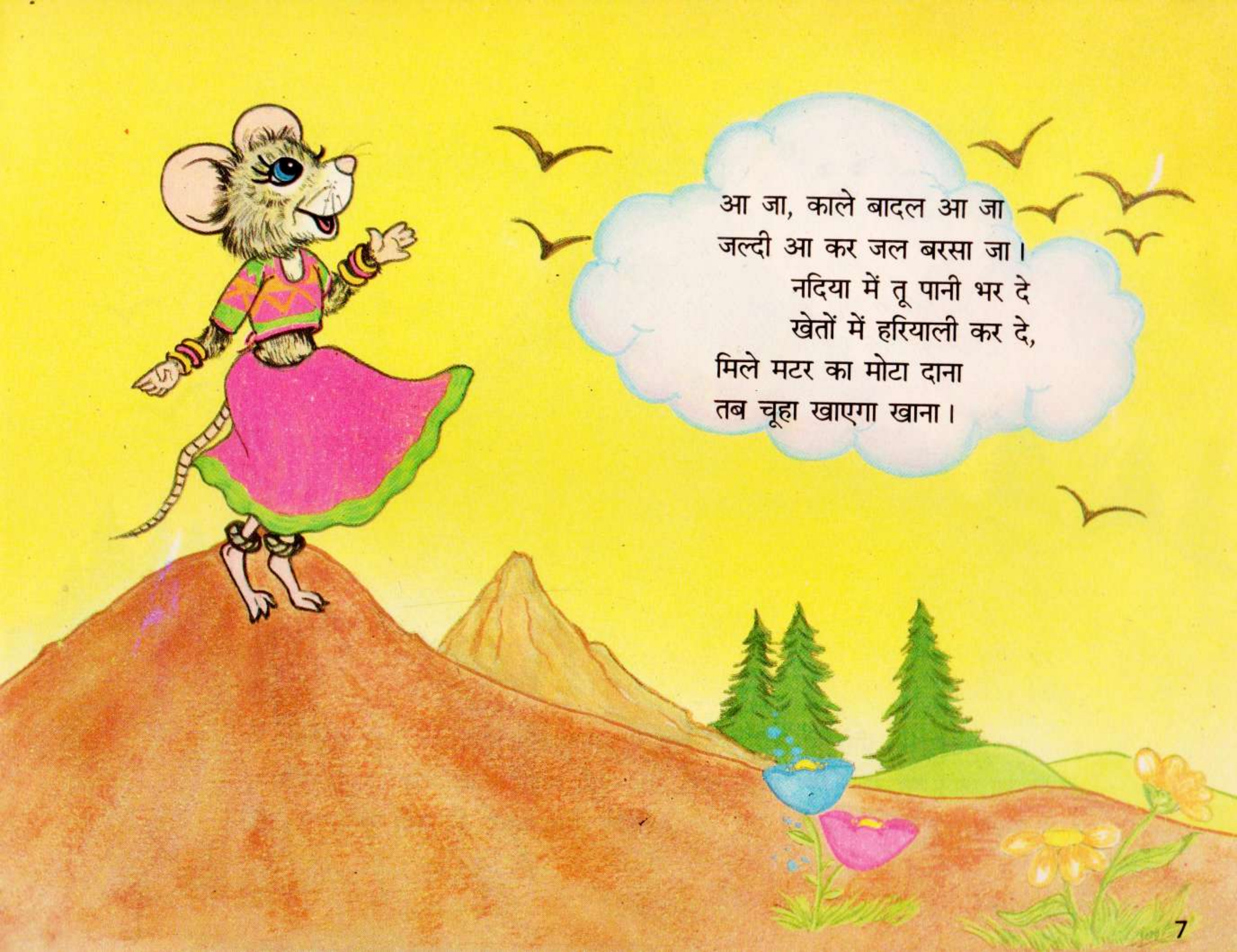

आ जा, काले बादल आ जा
जल्दी आ कर जल बरसा जा।
नदिया में तू पानी भर दे
खेतों में हरियाली कर दे,
मिले मटर का मोटा दाना
तब चूहा खाएगा खाना।

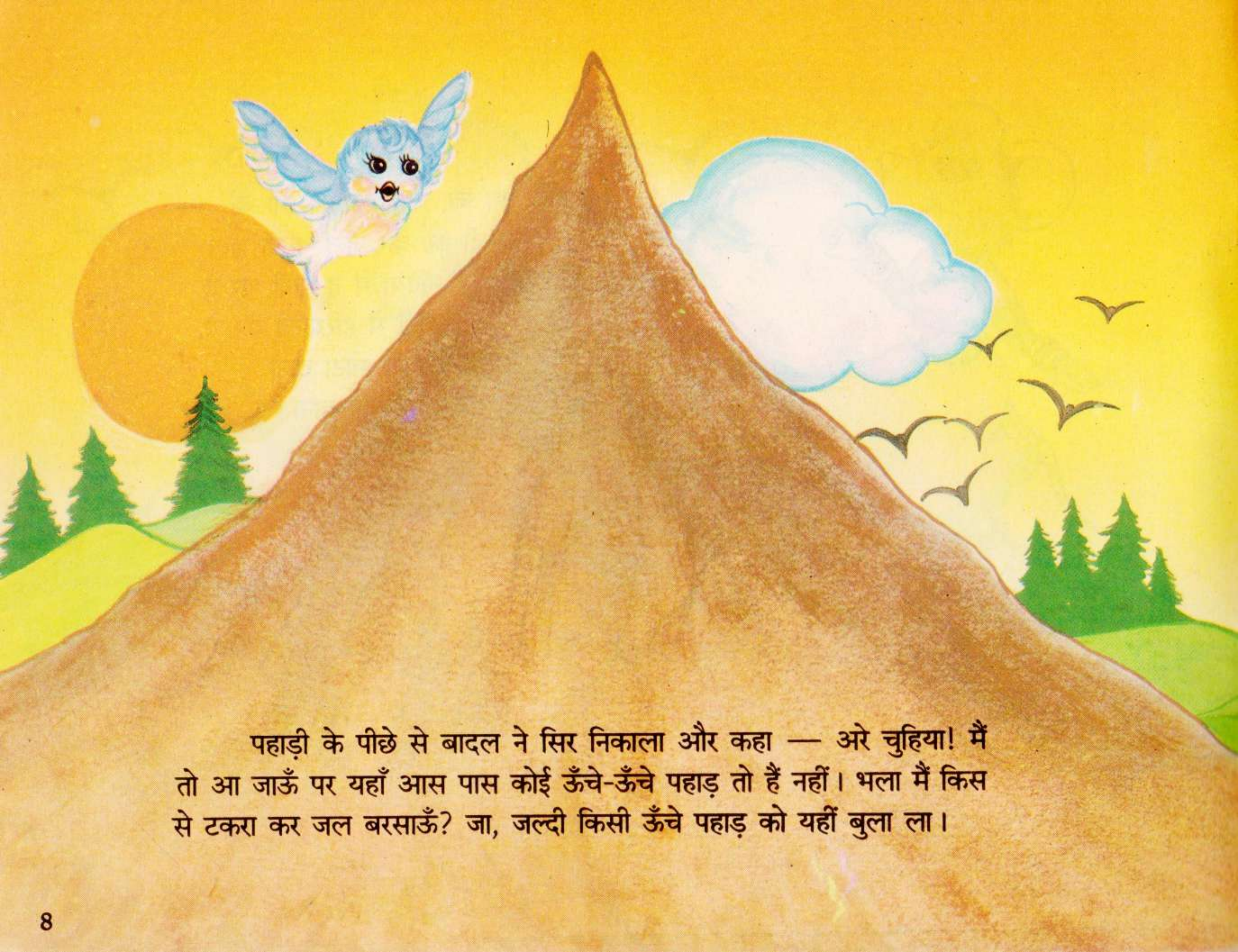

पहाड़ी के पीछे से बादल ने सिर निकाला और कहा — अरे चुहिया! मैं तो आ जाऊँ पर यहाँ आस पास कोई ऊँचे-ऊँचे पहाड़ तो हैं नहीं। भला मैं किस से टकरा कर जल बरसाऊँ? जा, जल्दी किसी ऊँचे पहाड़ को यहीं बुला ला।

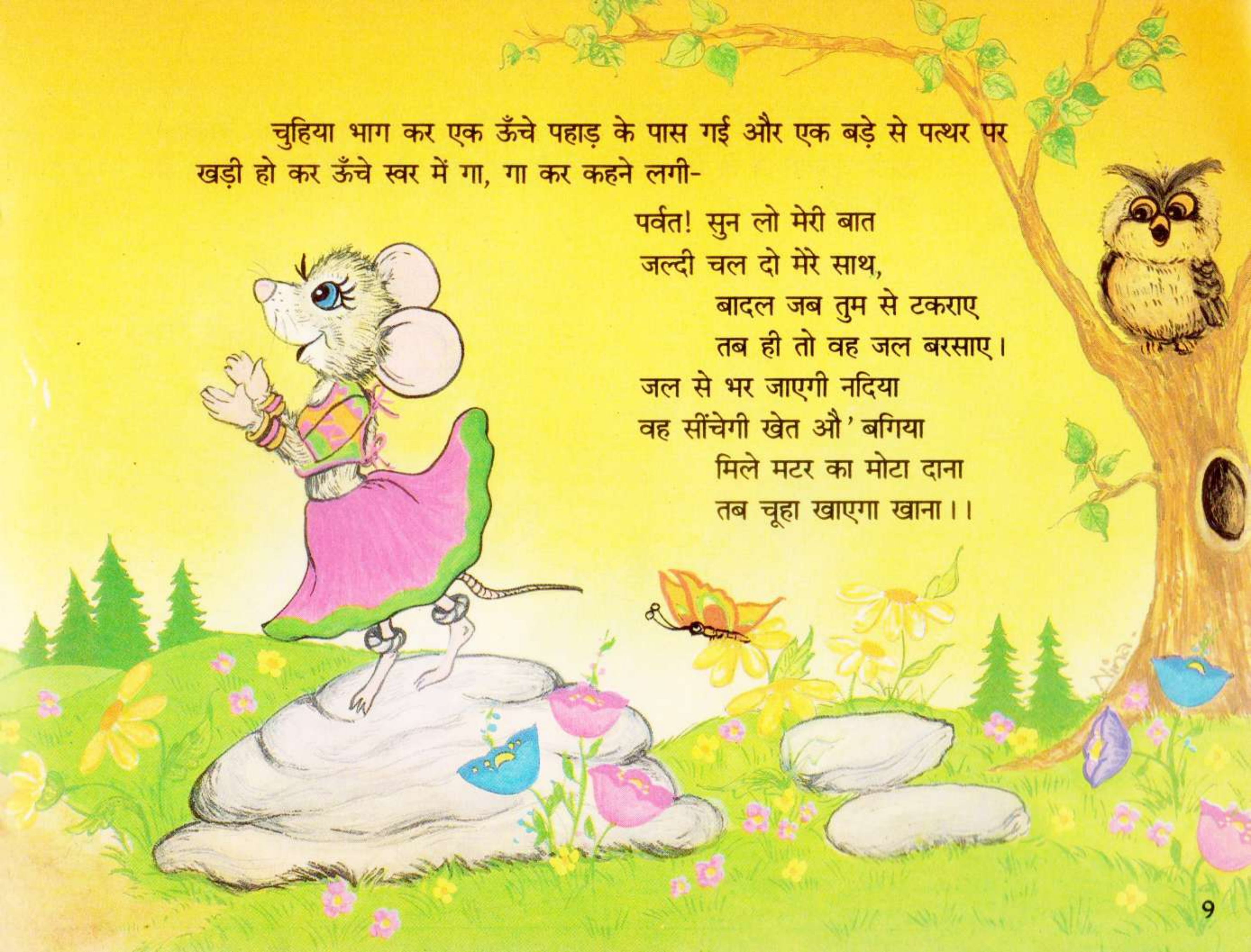

चुहिया भाग कर एक ऊँचे पहाड़ के पास गई और एक बड़े से पत्थर पर खड़ी हो कर ऊँचे स्वर में गा, गा कर कहने लगी-

पर्वत! सुन लो मेरी बात
जल्दी चल दो मेरे साथ,
बादल जब तुम से टकराए
तब ही तो वह जल बरसाए।
जल से भर जाएगी नदिया
वह सींचेगी खेत औ' बगिया
मिले मटर का मोटा दाना
तब चूहा खाएगा खाना।।

पर्वत ने इस छोटी सी चुहिया को देखा, और मन ही मन हँस कर बोला — छोटी चुहिया! न तो मेरे पंख हैं जो मैं उड़ सकूँ और न ही मेरे पैर हैं जो मैं चल सकूँ।

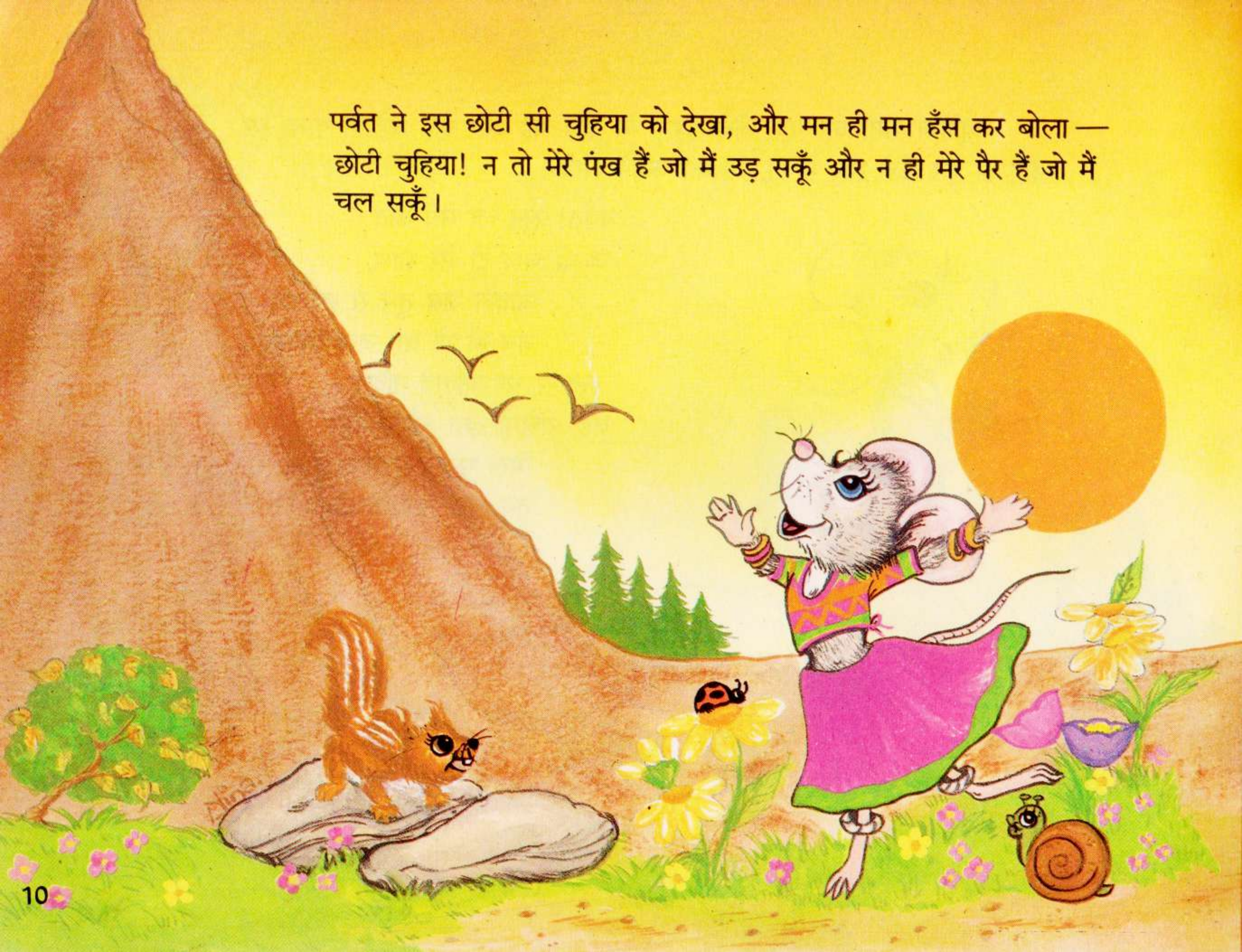

चुहिया ने कहा — तुम चिन्ता न करो, पर्वत दादा! मैं तुम्हें अपनी पीठ पर बैठा कर ले चलती हूँ। यह कह कर चुहिया अपने छोटे-छोटे पंजों से पर्वत की मिट्टी हटाने लगी।

यह देख कर पर्वत बोला — चुहिया! तू पवन के पास जा, वह बादलों को उड़ा कर यहीं ले आएगा, फिर बादल मुझ से टकरा कर वर्षा कर देंगे। चुहिया कूदती-फाँदती उसी पर्वत पर चढ़ गई और चोटी पर पहुँच कर ऊँचे स्वर में गाने लगी —

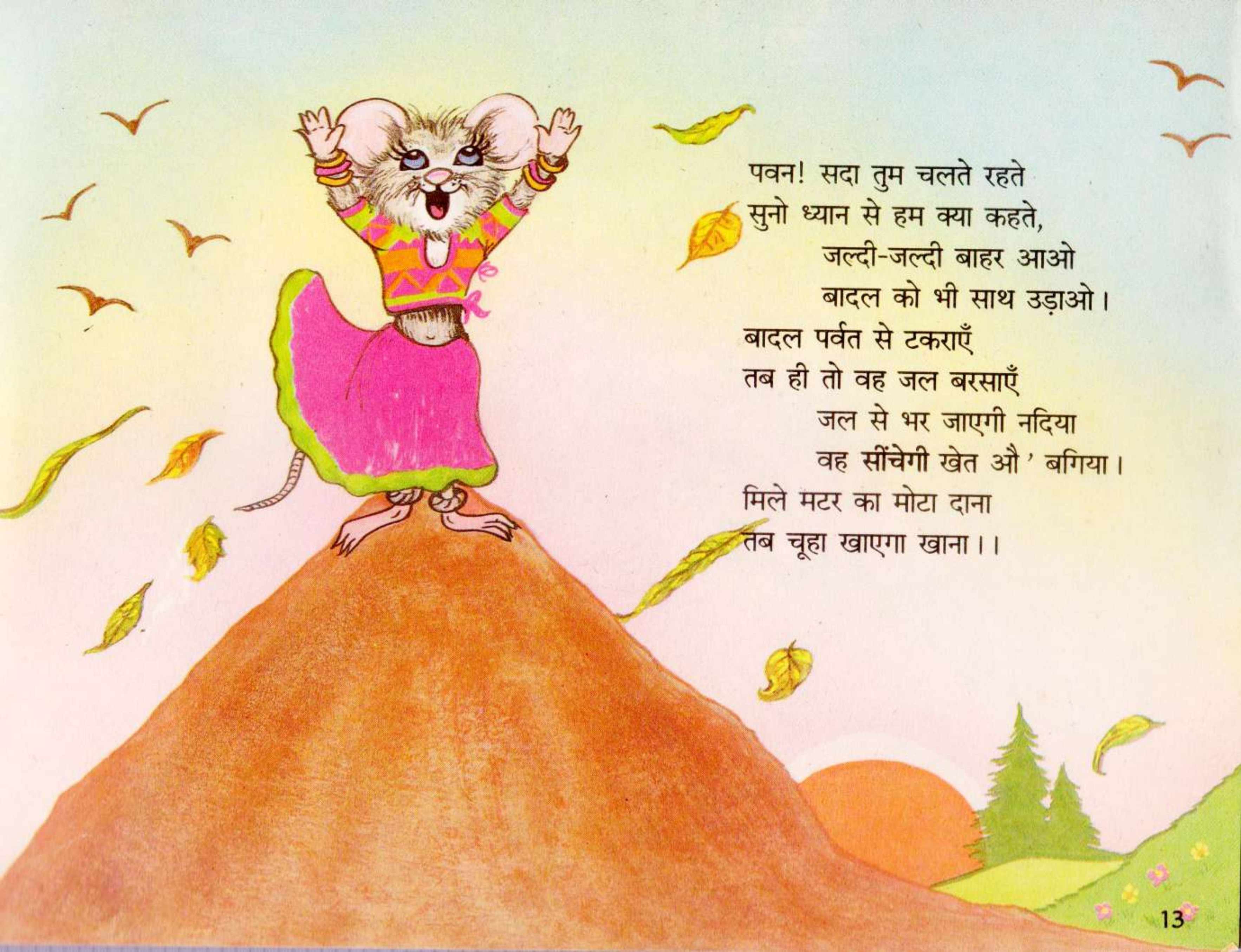

पवन! सदा तुम चलते रहते
सुनो ध्यान से हम क्या कहते,
जल्दी-जल्दी बाहर आओ
बादल को भी साथ उड़ाओ।
बादल पर्वत से टकराएँ
तब ही तो वह जल बरसाएँ
जल से भर जाएगी नदिया
वह **सींचेगी** खेत औ' बगिया।
मिले मटर का मोटा दाना
तब चूहा खाएगा खाना।।

पवन ने शायद चुहिया की बात सुन ली। उसे नन्ही चुहिया पर दया आ गई। इतने मे ही बड़े ज़ोर से हवा चलने लगी। चुहिया भागी और झटपट पर्वत से नीचे आकर छुप गई।

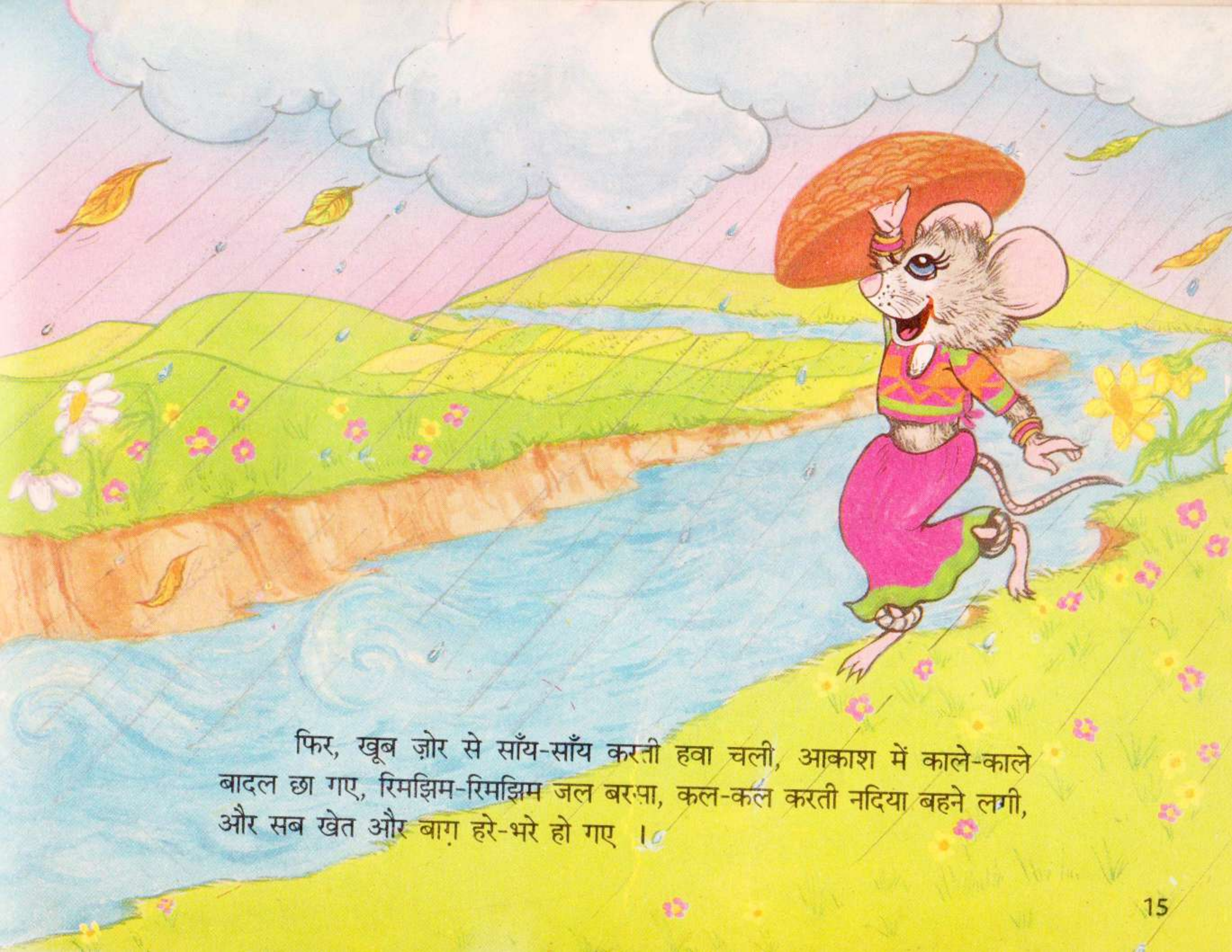

फिर, खूब ज़ोर से साँय-साँय करती हवा चली, आकाश में काले-काले बादल छा गए, रिमझिम-रिमझिम जल बरसा, कल-कल करती नदिया बहने लगी, और सब खेत और बाग़ हरे-भरे हो गए ।

मटर के पौधों पर लटकती हुई फलियाँ दानों से भर गईं और चुहिया मटर का दाना मुँह मे दबाए खुशी से फुदकती हुई चूहे के पास चली गई। दोनों बैठ कर कुटर-कुटर मटर के दाने और चावल खाने लगे।

धरती माँ की सरित गोद में
हम सब मिल-जुल खेलें, आओ
हरे-भरे वन वृक्ष मनोहर
पशु व पक्षी, इन्हें बचाओ।

धरती माँ की हरित गोद में,
आओ खेलें मिल-जुल हम सब
जल, थल, गगन, पशु और पक्षी
रक्षा करें सभी की हम सब।।